... बिले वत्स्यामि इति।

अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत- ''नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति। परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति।''

अथवा साध्विदम् उच्यते-

भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवेत्।।

Write in HC

VIII Skt
L-2

तदहम् अस्य आह्वानं करोमि। एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति। इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत्। सिंहस्य उच्चगर्जन-प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन्। शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इमम्पठत्-

अनागतं यः कुरुते स शोभते स शोच्यते यो न करोत्यनागतम्।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता।।

इसके बाद यह सुनकर शेर ने सोचा- " जरूर यह गुफा स्वामी को पुकारती होगी लेकिन आज मेरे डर के कारण नहीं बोलती।"

अथवा ऐसा ठीक ही कहा गया है-
भय के कारण लोगों के हाथ, पैर काम करना छोड देते हैं। वाणी (आवाज) भी कांपने लगती है।
तो मैं इसे पुकारता हूँ। इससे वह गुफा में प्रवेश करके मेरा भोजन बन जाएगा। ऐसा सोचकर शेर अचानक गीदड़ को पुकारता है। इससे अन्य पशु भी डर गए। गीदड़ ने भी वहाँ से दूर भागते हुए कहा-
जो आने वाले दुःख को सोच लेता है वह शोभा पाता है। जो आने वाले दुःख के बारे में नहीं सोचता वह दुःख / शोक को भोगता है।
इस जंगल में रहते हुए मैं बूढ़ा हो गया हूँ लेकिन मैंने कभी गुफा की वाणी नहीं सुनी।